†[جناب محمد علی خان: پولیس لاٹھی چارج کررہی ہے---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Khan, you give notice.

श्री मोहम्मद अली खानः सर, मैंने नोटिस दिया है। ...(व्यवधान)... मेरा नोटिस है। ...(व्यवधान)...

†[جناب محمد علی خان: سر، میں نے نوٹس دیا ہے---(مداخلت)--- میرا نوٹس ہے ---(مداخلت)---]

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Under what rule? Is it under Zero Hour or some other?

श्री मोहम्मद अली खानः ज़ीरो ऑवर के लिए है। ...(व्यवधान)...

†[جناب محمد علی خان: زیرو آور کے لیے ہے---(مداخلت)---]

श्री उपसभापतिः अगर वह ज़ीरो ऑवर के लिए है, तो it is not in the list today. You can approach the hon. Chairman for tomorrow. ...*(Interruptions)*... Now, Shrimati Viplove Thakur. ...*(Interruptions)*...

श्री मोहम्मद अली खानः सर, यह बहुत important है। ...(व्यवधान)...

†[جناب محمد علی خان: سر، یہ بہت امپارٹینٹ ہے ---(مداخلت)---]

You may meet Mr. Chairman. ...*(Interruptions)*... It is not allowed. Please go back to your seat. ...*(Interruptions)*... What are you doing? ...*(Interruptions)*... कृपया आप मेरी बात सुनिए। ...(व्यवधान)... आप मेरे दोस्त हैं, आप मेरी बात सुनिए। ...(व्यवधान)... चूंकि यह बहुत महत्वपूर्ण मुद्दा है, इसलिए आप चेयरमैन साहब से जाकर मिलिए और उनके पास इस मुद्दे को explain कर दीजिए। ...(व्यवधान)...

MATTERS RAISED WITH PERMISSION

Exploitation of women by advertising agencies

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): माननीय उपसभापति महोदय, अभी इतनी बड़ी बात हो गई है कि महिला हो या बच्ची हो, इस शहर में, इस कंट्री में कोई भी सेफ नहीं है। मैं आज जो मुद्दा उठाना चाह रही हूँ, यह भी महिलाओं की dignity और personality के बारे में है। जितनी ये advertising agencies हैं, चाहे वह फेयर एण्ड लवली है, चाहे वह पॉन्ड्स है या चाहे कोई भी हो, ये सब रंगभेद की नीति को आगे लेकर जा रही हैं। हर एजेंसी अपनी क्रीम के बारे में कहती है कि आप इसको लगाओगे, तो आप गोरे हो जाओगे, आप फेयर हो जाओगे। ये हमारी औरतों के अंदर हीन भावना पैदा कर रही हैं। इनको बिल्कुल बंद किया जाना चाहिए। इस प्रकार एक तरह का competition हो रहा है। मैं एक दुकान पर गई, वहां पर एक औरत फेयर एण्ड लवली की क्रीम मांग रही थी कि शायद मैं भी सुंदर लग सकूं और जब उसने उसकी कीमत पूछी, तो वह उसके बस में नहीं था और वह

[श्रीमती विप्लव ठाकुर]

मायूस होकर चली गई। हमारे देश में यह क्या हो रहा है? हमारी वह संस्कृति कहां गई, हमारी प्रथाएं कहां गई, जहां पर औरत को औरत समझा जाता था, उसको एक मूर्ति नहीं माना जाता था। आज हर जगह एक competition चला हुआ है। आप अपने प्रोडक्ट्स को बदलने और बेचने के लिए एजेंसीज़ के ऊपर एजेंसीज़ आ रही हैं। यहां यह बात आई थी कि जो चीज़ बेची जाती है,पहले उसका प्रयोग होना चाहिए। मैं पूछना चाहती हूँ कि जो लोग इनकी advertising करते हैं, वे लोग इसका कितना प्रयोग करते हैं? वे कितने गोरे हो गए हैं? वे कितने सुंदर हो गए हैं? मेरा सुझाव है कि इन एजेंसीज़ को बंद किया जाना चाहिए।

महोदय, मैं यह बात आपके सामने इसलिए ला रही हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि औरत का दर्द क्या होता है। वह क्या महसूस करती है, जब वह समझती है कि मेरी शादी इसलिए नहीं हो रही है, क्योंकि मेरा संग सांवला है, मैं सुंदर नहीं हूँ। हमारे यहां ऐसी जो बातें चल रही हैं, ऐसी जो प्रथा चल रही है, उसको दूर करना चाहिए। ऐसी एजेंसीज़ को खत्म करना चाहिए। आप अपने प्रोडक्ट्स बेचिए, इसमें मुझे एतराज़ नहीं है, लेकिन इस तरह की धारणाओं से, इस तरह के वायदे देकर, इस तरह की झूठी आशा देकर मत बेचिए। ऐसी बातें महिलाओं के मन को दुखी करती है, उनके मन को अशांत करती हैं, उनके दिल में हीन भावना पैदा होती है। उनके अंदर complex पैदा होता है कि इस समाज में हमारा कोई रुतबा नहीं है, हम इस लायक नहीं हैं। मैं चाहूंगी कि सरकार इस पर पूरी तरह से गौर करे और इस तरह के प्रॉडक्ट्स को बेचने से रोके और इस तरह की advertising agencies को बंद करे।

श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी (मध्य प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री हुसैन दलवई (महाराष्ट्र): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती रजनी पाटिल (महाराष्ट्र): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

डा. अनिल कुमार साहनी (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री रवि प्रकाश वर्मा (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

डा. चन्द्रपाल सिंह यादव (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती कहकशां परवीन (बिहार): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करती हूँ।

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय से संबद्ध करता हूँ।

†[**چودھری منوّر سلیم (اترپردیش)**: مہودے، میں بھی خود کو اس موضوع سے سمبدّ کرتا ہوں۔]

† Transliteration in Urdu Script.

SHRI ANANDA BHASKAR RAPOLU (Telangana): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SOME HON. MEMBERS: We all associate ourselves with the issue raised by the hon. Member.

Need for development of roads in rural areas connecting to urban areas and giving priority for developmental works in settlements of weaker sections

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, मैं गांवों के हालात के बारे में और बरसात में वहां पर जो मुश्किलें हैं, इन सब बातों की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। हम जानते हैं कि हिन्दुस्तान गांवों में बसा हुआ है और आवागमन के रास्ते बनाने की दृष्टि से हरेक सरकार ने कुछ पहलें की हैं, किन्तु आज भी ऐसे गांव हैं, जहां पहुंचने में मुश्किल होती है। और बरसात के दिनों में नदी-नालों के कारण वे सारे शहरों से कट जाते हैं। इस कारण स्वास्थ्य की तकलीफ होने के कारण से शहरों तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है। आज भी गांव के लोग उपचार के अभाव में मर जाते हैं तथा उन्हें सुविधाएं नहीं मिल पाती हैं। इस प्रकार से गांवों में जो बसावट है, उन बसावट में भी जो गरीब बसावटें हैं, जो मजदूर वर्ग की बसावटें हैं, जो कमजोर वर्ग की हैं, अनुसूचित जाति की हैं, जनजाति के लोगों की हैं, ऐसी बसावटों में बरसात के दिनों में गंदगी, कीचड़ और उसके कारण से होने वाली बीमारियां परेशानी का सबब बनती हैं। मैं आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह करना चाहता हूं कि जो पहले हमने प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना का इस प्रकार का आगाज़ किया था और जिस कारण सड़कें बड़ी अच्छी बनती थीं, गुणवत्ता की बनती थीं, किन्तु उस समय जो सड़कें बनाई गई थीं, उसमें पुल-पुलियाओं के लिए क्ल्वट्र्स बना करके ही पूरा कर दिया गया था, बड़ी पुल-पुलियाएं नहीं बनाई गई थीं। जो पहले प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़कें बन गई थीं, उन सड़कों के ऊपर जो पुल बने हैं, पुलियाएं बनी हैं, उनको ऊंचा उठाने की जरूरत है। अभी जो नई सड़कें बन रही हैं, उनमें यह प्रावधान करना जरूरी होगा कि गांवों में बारहमासी आवागमन हो सके। अभी मैं पिछले शनिवार और रविवार को गांवों में गया था। वहां मैंने देखा कि रतलाम का जो सुखेड़ा गांव है, वहां कीचड़ ही कीचड़ है और आसपास की जो नदियां हैं, उन नदियों में पानी बढ़ जाने के कारण से वह गांव कट जाता है। उस गांव की आबादी लगभग 15-16 हजार की है। इस कारण से गांवों में कीचड़ और अन्य समस्याओं से शमशान तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाता है। रविवार के दिन मैं बिलारागढ़ के गांव में गया था। वहां मैंने देखा कि गरीब बस्तियों में इस प्रकार के हालात हैं कि यहां पर जीना दूभर हो गया है। सरकार की मकान बनाने की जो योजना है, आवास देने की जो योजना है,उस योजना में दी जाने वाली जमीन का जो रकबा है, या जिस आवास के लिए जो जमीन दी जाने वाली है, उसमें शौचालय का भी प्रावधान करना चाहिए।